पाठ -१२ धुलाई कला

ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों की धुलाई

एक दिन की बात है। एकता और मीनू बाजार जा रही थीं। अचानक बात करते-करते एकता की नजर मीनू के स्वेटर पर गई और वह बोली- अरे मीनू! तुम्हारा यह स्वेटर छोटा कैसे हो गया? कितना सुंदर लगता था। मीनू बोली- क्या बताऊँ एकता, कल मैंने अपने इस स्वेटर को गर्म पानी में भिगो दिया। मैंने सोचा गर्म पानी में मेरा स्वेटर अच्छी तरह साफ हो जाएगा। लेकिन मैंने ज्यों ही स्वेटर को गर्म पानी के साबुन के घोल से निकाला वह अपना आकार बदल चुका था। अब क्या करती? मैंने सोचा, चलो आज इसे ही पहन लें।

जरा सोचो, मीनू का सुंदर सा स्वेटर थोड़ी सी असावधानी के कारण खराब हो गया। अतः हमें अलग-अलग प्रकार के वस्त्रों को धोने की समुचित जानकारी होनी चाहिए। भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र भिन्न-भिन्न तंतुओं (धागों) द्वारा निर्मित होते हैं। अतः उनकी धुलाई भी अलग-अलग तरीकों से की जाती है। एक ही विधि से सभी प्रकार के वस्त्र धोने से उनकी सुंदरता और टिकाऊपन दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। अतः सूती, ऊनी और रेशमी तीनों प्रकार के वस्त्रों को उचित विधि से धोना चाहिए।

ऊनी वस्त्रों की धुलाई-

ऊनी वस्त्र दो प्रकार के होते हैं-

1. हाथ से बुने,

2. मशीन से बुने।

मशीन से बुने वस्त्रों को जहाँ तक हो सके ड्राइक्लीनिंग (सूखी धुलाई) कराएँ।

- ऊनी कपड़ों को ब्रश से झाड़कर धूल साफ कर लें।
- हल्के गुनगुने पानी से रीठे का सत (पानी) अथवा ऊनी वस्त्रों के लिए विशेष रूप से बनी धुलाई सामग्री को डालकर खूब झाग उठाएँ।
- कपड़े को साबुन के पानी में डालकर 5 मिनट तक भीगने दें, फिर हल्के हाथों से मलें।
- यदि किसी स्थान पर वस्त्र अधिक गंदा है तो वहाँ साबुन का गाढ़ा घोल लगाकर साफ करें।
- साफ पानी में तब तक धोएँ,, जब तक साबुन का पानी अच्छी तरह न निकल जाएँ।
- हाथ से दबाकर उसका पानी निकालें।
- धुले हुए वस्त्र को तौलिए में लपेटें। तौलिया अतिरिक्त पानी सोख लेगा।
- छायादार स्थान में चैकी या तख्त पर फैलाएँ।

ऊनी वस्त्रों को धोते समय ध्यान देने योग्य बातें

- धोने से पूर्व धूल को अच्छी तरह झाड़ लें।
- यदि गर्म कपड़े फटे हों, तो उन्हें रफू करा लें।

- ईज़ी या रीठे में धोएँ। (हमेशा तरल (स्पुनपक) डिटर्जेंट का ही प्रयोग करें।
- रंग छोड़ने वाले गर्म कपड़े अलग धोएँ।
- हल्के गुनगुने पानी में धोएँ।
- ब्रश से रगड़कर न धोएँ।
- ऊनी वस्त्रों को कभी भी ऐंठ या मरोड़कर न निचोड़ें।
- हैंगर या रस्सी पर न टाँगें एवं धूप में न सुखाएँ। समतल स्थान/चारपाई पर रखकर सुखाएँ ताकि वस्त्र का आकार न बिगड़े।
- वस्त्रों को उल्टा करके सुखाएँ।

रेशमी वस्त्रों की धुलाई

रेशम के धागे रेशम के कीड़े से प्राप्त किए जाते हैं। ये धागे बहुत कोमल और नाजुक होते हैं। अधिक ताप व क्षार के प्रभाव से वे कमजोर पड़ सकते हैं। इसलिए इनको धोते समय बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है।

- इन्हें साबुन के घोल में या रीठे के घोल में भिगोएँ।
- 10 मिनट बाद एक-एक करके हल्के हाथों से मलकर मैल साफ कर लें।
- 4-5 बार साफ पानी से कपड़े को धुलें।
- इन वस्त्रों में चमक लाने के लिए बाद में अंदाज से पानी लेकर थोड़ा सा सिरका डालकर वस्त्र को डुबोकर तुरंत निकाल लें।
- इन कपड़ों में कड़ापन लाने के लिए गोंद का कलफ प्रयोग करें।
- इन्हें छायादार स्थान में सुखाएँ।

रेशमी वस्त्रों को धोते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- इन वस्त्रों को हल्के हाथों से मलकर धोएँ।

- कपड़े को पीटे नहीं, इससे कपड़ा फट सकता है।
- तेज धूप में न सुखाएं, इससे रेशमी वस्त्रों का रंग उड़ सकता है।
- इसमें नील न लगाएँ, इन्हें गर्म पानी में न धोएँ।
- मरोड़कर या ऐंठकर न निचोड़े।

वस्त्रों पर इस्त्री (प्रेस) करना

वस्त्रों को धोने से उनमें सिलवटें आ जाती हैं, अतः कपड़ों पर इस्त्री करना आवश्यक है।

इस्त्री दो प्रकार की होती है-1. कोयले की इस्त्री

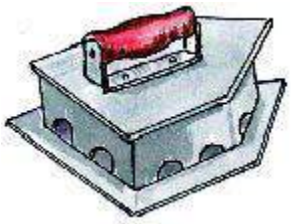

2. बिजली की इस्त्री

इस्त्री (प्रेस) करने से लाभ

- वस्त्रों की सिलवटें दूर होती हैं।
- वस्त्र आकर्षक और सुंदर लगते हंै।
- वस्त्रों में चमक आ जाती है।

- कपड़ों में क्रीज़ (मोड़) बनी रहती हैं।

सूती, ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों की बनावट अलग-अलग होती है। इनमें अलग-अलग प्रकार का धागा प्रयोग किया जाता है। कुछ वस्त्र अधिक ताप सहन कर लेते हैं किन्तु कुछ केवल हल्का ताप सहन कर सकते हैं।

इस्त्री करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- कपड़ा इस्त्री करने से पहले इस्त्री को साफ कर लें।
- इस्त्री हमेशा समतल स्थान या तख्त पर मोटा साफ कपड़ा बिछाकर करें।
- इस्त्री करते समय क्रीज़ या मोड़ का ध्यान रखें।
- इस्त्री को एक जगह अधिक देर तक न रखें।

ऊनी वस्त्रों पर इस्त्री करना

- ऊनी वस्त्रों पर उल्टी ओर से प्रेस करें।
- प्रेस हल्का गरम हो।
- ऊनी वस्त्रों पर सूती मलमल का भीगा वस्त्र बिछाकर प्रेस करें।

रेशमी वस्त्रों पर इस्त्री करना

- रेशमी वस्त्रों को सीधा करके उस पर गीला कपड़ा डालकर इस्त्री करें।
- हल्की गरम इस्त्री (प्रेस) का प्रयोग करें।

वस्त्रों की सुरक्षा एवं रख-रखाव

वस्त्र हमारे रक्षक होते हैं। ये सर्दी, गर्मीएवं बरसात से हमारे शरीर की रक्षा करते हैं। अतः उनकी सुरक्षा करना हमारे लिए अति आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित उपायों पर ध्यान देना आवश्यक है-

- वस्त्र रखने की अलमारी/बक्से को साफ व सीलनमुक्त होना चाहिए। वस्त्र रखने के पूर्व इस पर अखबार बिछा देना चाहिए।

- अलमारी में नीम की सूखी पत्ती, नेफ्थलीन की गोलियाँ डालनी चाहिए। इससे वस्त्रों में कीड़े नहीं लगते हैं।
- सर्दियाँ समाप्त होने पर ऊनी वस्त्रों को धोकर, सुखाकर अखबार में लपेटकर रखना चाहिए।
- जरी/गोटे से बने वस्त्रों को प्लास्टिक की थैली में बंद कर रखना चाहिए।
- समय-समय पर वस्त्रों को नमीमुक्त करने के लिए धूप दिखाना आवश्यक है।

अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र भिन्न-भिन्न ..... द्वारा निर्मित होते हैं।

(ख) ऊनी वस्त्रों को धोने से पूर्व कागज पर उनकी ..... उतार लें।

2. अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

(क) ऊनी वस्त्र कितने प्रकार के होते हैं ?

(ख) नील किन वस्त्रों में देते हैं ?

3. लघुउत्तरीय प्रश्न

(क) रेशमी वस्त्रों में चमक लाने के लिए क्या करना चाहिए ?

(ख) वस्त्रों में इस्त्री करने से क्या लाभ है ?

4. दीर्घउत्तरीय प्रश्न

(क) ऊनी वस्त्र धोते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

(ख) वस्त्रों की सुरक्षा एवं उचित रख-रखाव के लिए आप क्या-क्या करेंगे ?

प्रोजेक्ट वर्क: -

आप अपने आस-पास किसी धोबी की दुकान पर जाकर पता करें कि वे विभिन्न वस्त्रों की धुलाई किस प्रकार करते हैं एवं किन-किन सामग्रियों का प्रयोग करते हैं ?